श्री गायत्री चालीसा

श्री गायत्री चालीसा

ह्रीं श्रीं क्लीं मेधा प्रभा जीवन ज्योति प्रचंड |
शांति कांति जागृत प्रगति रचना शक्ति अखंड || 1||

जगत जननी मंगल करनिं गायत्री सुखधाम |
प्रणवों सावित्री स्वधा स्वाहा पूरन काम || 2||

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी |
गायत्री नित कलिमल दहनी || 3||

अक्षर चौविस परम पुनीता |
इनमें बसें शास्त्र श्रुति गीता || 4||

शाश्वत सतोगुणी सत रूपा |
सत्य सनातन सुधा अनूपा |
हंसारूढ सितंबर धारी |
स्वर्ण कांति शुचि गगन-बिहारी || 5||

पुस्तक पुष्प कमंडलु माला |
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला || 6||

ध्यान धरत पुलकित हित होई |
सुख उपजत दुःख दुर्मति खोई || 7||

कामधेनु तुम सुर तरु छाया |
निराकार की अद्भुत माया || 8||

तुम्हरी शरण गहै जो कोई |
तरै सकल संकट सों सोई || 9||

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली |
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली || 10||

तुम्हरी महिमा पार न पावैं |
जो शारद शत मुख गुन गावैं || 11||

चार वेद की मात पुनीता |
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता || 12||

महामंत्र जितने जग माहीं |
कोई गायत्री सम नाहीं || 13||

सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै |
आलस पाप अविद्या नासै || 14||

सृष्टि बीज जग जननि भवानी |
कालरात्रि वरदा कल्याणी || 15||

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते |
तुम सों पावें सुरता तेते || 16||

तुम भक्तन की भकत तुम्हारे |
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे || 17||

महिमा अपरंपार तुम्हारी |
जय जय जय त्रिपदा भयहारी || 18||

पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना |
तुम सम अधिक न जगमे आना || 19||

तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा |
तुमहिं पाय कछु रहै न कलेसा || 20||

जानत तुमहिं तुमहिं है जाई |
पारस परसि कुधातु सुहाई || 21||

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई |
माता तुम सब ठौर समाई || 22||

ग्रह नक्षत्र ब्रह्मांड घनेरे |
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे ||23||

सकल सृष्टि की प्राण विधाता |
पालक पोषक नाशक त्राता || 24||

मातेश्वरी दया व्रत धारी |
तुम सन तरे पातकी भारी || 25||

जापर कृपा तुम्हारी होई |
तापर कृपा करें सब कोई || 26||

मंद बुद्धि ते बुधि बल पावें |
रोगी रोग रहित हो जावें || 27||

दरिद्र मिटै कटै सब पीरा |
नाशै दूःख हरै भव भीरा || 28||

गृह क्लेश चित चिंता भारी |
नासै गायत्री भय हारी ||29||

संतति हीन सुसंतति पावें |
सुख संपति युत मोद मनावें || 30||

भूत पिशाच सबै भय खावें |
यम के दूत निकट नहिं आवें || 31||

जे सधवा सुमिरें चित ठाई |
अछत सुहाग सदा शुबदाई || 32||

घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी |
विधवा रहें सत्य व्रत धारी || 33||

जयति जयति जगदंब भवानी |
तुम सम थोर दयालु न दानी || 34||

जो सद्गुरु सो दीक्षा पावे |
सो साधन को सफल बनावे || 35||

सुमिरन करे सुरूयि बडभागी |
लहै मनोरथ गृही विरागी || 36||

अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता |
सब समर्थ गायत्री माता || 37||

ऋषि मुनि यती तपस्वी योगी |
आरत अर्थी चिंतित भोगी || 38||

जो जो शरण तुम्हारी आवें |
सो सो मन वांछित फल पावें || 39||

बल बुधि विद्या शील स्वभाओ |
धन वैभव यश तेज उछाओ || 40||

सकल बढें उपजें सुख नाना |
जे यह पाठ करै धरि ध्याना ||

यह चालीसा भक्ति युत पाठ करै जो कोई |
तापर कृपा प्रसन्नता गायत्री की होय ||